बाबाक आत्मीयता

लोक हुनका बाबा कहैत छलनि। बाबा कहायब हुनका नीक लगनि। से बात कत्ते गोटे कहैत छथि। एक गोटा कहैत छथि जे हुनका कोनो नवयुवतियोसँ बाबा कहेबा पर आपत्ति नहि छलनि। केशवदास नहि छला ओ। कियो नवयुवती जखन हुनका बाबा कहनि तऽ हुनकर हृदयमे वात्सल्य उमड़ि आबय। भोजपुर इलाकामे ब्राह्मणकेँ बाबा कहल जाइत छैक। बूढ़ो बाबा आ नेनो बाबा। ब्राह्मण दुआरे बाबा। कतेक गोटा के एहि सम्बोधन पर फूलि कऽ कुप्पा होइत देखने हेबनि। साइत ब्राह्मणत्वक मोजरक कारणे। मुदा ओ ब्राह्मण बाबा नहि छला। नागा बाबा सेहो नहि छला। संसार त्यागी ओ कोना भऽ सकैत रहथि ? संसारसँ तऽ हुनका अत्यन्त लगाओ छलनि। ओ परिवारक, गाम घरक बाबा छला। जे बाबा अपन संतानमे सुसंस्कार भरैत अछि। हँसैत तमसाइत नीक बेजाए बुझबैत अछि। संसारक कोमलता कठोरताक ज्ञान करबैत अछि। जीबाक ढंग सिखबैत अछि। हाथी-घोड़ा बनि कऽ पोता-पोती के पीठ पर चढ़बैत अछि। ओ मुँह-कान बना कऽ, नाचि कऽ संतानक मनोरंजन करैत अछि। गलती भेलापर कानो ऐंठैत अछि।

बाबाकेँ बहुतरास बात पसिन्न नहि छलनि। ओ ककरो छोट नहि बुझैत छला। ककरो पैघत्वक कारणे मोजर देब ओ नहि जनैत छला। ओ अपन समाने सभकेँ बुझैत छला। एक्कोरत्ती घमण्ड हुनका बरदास्त नहि रहनि। बड़का-बड़काक घमण्ड तोड़ै लेल ओ मारुक कविता सभ लिखैत छला। बाबाकेँ ककरो डर नहि छलनि । कियो होथि, नेता, धनिक, अफसर, पण्डित सभकेँ समाजक दिससँ ओ चेतौनी दैत छला। समाजक लेल, गरीबक लेल ओ ककरोसँ भीड़ि सकैत छला। अपन कविताक अचूक व्यंग्य-वाणसँ बेधि सकैत छला। बाबा गरीब आ विपन्नक मित्र छला। समाङ छला।

बाबाकेँ गाछ बिरीछ बड़ पसिन्न रहनि। मेघ देखि कऽ ओ उमंगमे नाच' लागथि। अगहन मास हुनका प्रिय रहनि। अगहन मासमे धान होइ छै। अगहनमे सभ जन, मजूर, किसानक घर अन्नसँ भरि जाइ छै। पोखरि, माछ, मखान बाबा के बड़ नीक लगनि। असलमे बाबा एकटा खेतिहर छला। खेत हुनका मोनमे रचल बसल छल। कोदारि, खुरपी, हर, खेतीमे काज आबऽ बला औजार सभ ओ कहियो नहि बिसरि सकला। ओ अपन कवितो लिखबकेँ खुरपी चलायब

कहथि। कोदारि नहि तऽ खुरपीये। नहि खेत कोड़ल होइये तँ खुरपीसँ कमैनी तऽ होइये। खढ़ पात हेंठ कयल तऽ होइये। कनियो दूरक माटि पलटल तँ होइये। छोट छोट नवजात गछुलीकेँ स्वस्थ सुन्दर बनेबाक उपक्रम तँ कयल होइये। ओकरामे नवजीवनक संचार तँ कयल होइये। यैह नवजात गछुली विशाल वृक्ष बनत। धरतीक सुन्दरता बढ़ाओत। बाबा सुन्दर धरती चाहैत छला।

बाबा सुन्दर मनुक्ख सेहो चाहैत छला। एहन मनुक्ख जे ककरोसँ घृणा नहि करय। ककरो अस्पृश्य नहि मानय। संसारक हरेक वस्तु बाबाकेँ सुन्दर ओ सार्थक लगैत रहनि। ओ भेद-भाव, वर्ग, जाति नहि चाहैत छला। ऊँच नीचक भावनासँ ओ एकदम फराक रहथि। समाजमे सभ कियो समान हूअय। सभकेँ अपन जीवन अपना ढंगसँ जीबाक अधिकार होइ। जीवनमे संघर्ष के ओ सर्वोपरि मानैत छला। वर्ग- भेद देखि ओ तमसा जाथि। कोनो मनुक्खकेँ दोसराक शोषण-दमन करैत देखि हुनकामे प्रतिहिंसा जागि जाइन। बाबा अगियाबेताल भऽ जाथि। हुनकर अनेकानेक कविता सभमे ई बात कियो देखि सकैत अछि। भरि जीवन हुनकामे ई विचार बनल रहलनि।

बाबाकेँ दूटा मोन नहि छलनि। एक्केटा मोन रहनि। आचार आ विचारमे कोनो भेद नहि रहनि। सोचलहुँ किछु, बजलहुँ किछु आ केलहुँ किछु, एहन लोक नहि छला ओ। एहने लोक आइ काल्हि सभ तरि फड़ि गेल अछि। जेकर बातक कोनो ठेकान नहि होइत छैक। करत किछु आ बाजत किछु , मुदा बाबाकेँ से पसिन्न नहि छलनि। ओ जे बात सोचै छला से मोनसँ करैत छला। सैह बात बजितो छला। से कविता हो, उपन्यास हो आ कि आन कोनो रचना हो। मंच पर भाषण देबाक हो आ कि जीवनमे व्यवहार हो। सभठाम एक रंग रहथि बाबा। बाबा गिरगिट संग रंग नहि बदलि सकैत छला।

पण्डित सभ कतेक तरहक चश्मा लगा कऽ हुनका देखलनि। सभ अपन-अपन छहरदेबालीक भीतर ठाढ़ भऽ हुनका भजियबैत छला। आइयो देखैत रहैत छथि। सभ अपनामे बाबा के मिलबऽ चाहैत अछि। बाबाक नाम लऽ कऽ अपन झंडा पतक्का ऊँच करऽ चाहैत अछि बाबाकेँ अपन बनबऽ चाहैत अछि। हुनकर मुइलाक बाद ई काज आर बेसी जोरसँ भऽ रहल अछि। सभ बाबाकेँ पकड़ि अपनाकेँ ऊँच करऽ चाहैत अछि। बाबा सन अपनाकेँ कहऽ चाहैत अछि। मुदा बाबा ककरो पाँजमे नहि आबि रहल छथिन। कतहु ने कतहु अधिकांश के गरऽ लगैत छथिन। लोक इस-इसो करैत हुनका भरि पाँज पकड़ऽ चाहैत अछि। मुदा बाबा तऽ विपन्न लोकक हेंजमे मुसकुराइत ओहिना ठाढ़ रहैत छथि। ओहि हेंज

धरि पहुँचबाक साहस बहुतो के नहि होइत छैक । लोकक नाटक असफल भऽ रहल छैक । अपन समाङक बीचमे ठाढ़ बाबा हँसैत रहैत छथि। खिलखिल ..... खिलखिल।

सौंसे भारतमे बाबाक हजारो परिवार रहनि। हजारो परिवारमे बाबा अपन यात्रामे रहल छला । दिनसँ मास धरि। परिवारक हरेक सदस्यक ओ बाबा रहथि। स्त्री आ नेना सभक तऽ ओ खास लोक छला। एकदम अपन लोक। जेकरा ओ अपन सुख दु:ख कहि सकैत अछि बाबा सभकेँ नीक बात सिखबैत रहथिन। बच्चा सभ संग ओ संगतुरिया बनि कऽ खेलाइत रहथि। गृहिणी सभकेँ घर सुन्दर बनौनाइ सिखबैत रहथि। तरकारी तीमन बनौनाइ सेहो सिखबथिन। शिक्षा दीक्षामे अपन सुझाव देथिन। नोकरी चाकरी खेती पथारी मादे कोनो समस्याक समाधान करथिन। लोक हुनकर बात गौरसँ सुनय, मानय। आइ काल्हि जखन लोक अपनेमे जीबऽ चाहैये। आन परिवारमे रहबामे असुविधाक अनुभव करैये। अपने बिछान नीक लगै छै। अपने तकिया पर नींद होइ छै। खेबा पीबाक अपन खास रंग ढंग भऽ गेल छैक। तखन सोचियौ, बाबा कोना एतेक भिन्न-भिन्न परिवारमे रहि जाइत छला ? कतेक जाति, कतेक वर्ण, कतेक संस्कृतिक बीच बाबा अपन लोक भऽ कऽ जीबैत छला। जीबाक ई ढंग बाबा के कतसँ अयलनि ? अपन समाजक संभ्रान्त द्वीप सन बनि कऽ जीबऽ बला लोककेँ बाबाक जीबाक ढंग चकविदोर लगबैत अछि। बाबा अबोध बच्चा जकाँ स्वयं अपनाके बेसी कऽ कय नहि बुझैत छला। अपन समान सभकेँ बुझबाक बात अपन संस्कृतिक एहन विशेषता थिक जे विश्वमे कतहु आनठाम नहि अछि। एहेन लोक संरक्षक प्रतिष्ठापक आ नीक मनुक्ख होइये। बाबा एहने लोक छला।

बाबा अपन मिथिलासँ बड़ प्रेम करैत छला। एहिठामक धरती, लोक-वेद नीक बेजाए दु:ख-सुख, सम्पन्नता-विपन्नता, संघर्ष, कुरूपता, सौन्दर्य सभ किछु बाबाकेँ मोन रहैत छलनि। कत्तहु रहथि देशमे, विदेशमे अपन मिथिलाकेँ ओ नहि बिसरथि। सभठाम, सभ भाषामे ओ अपन समाजक, अपन मिथिलाक बात राखथि। आनठामक लोक बाबाक लेखनीसँ मिथिलाकेँ फेर तेसर बेर नब आँखिसँ चिन्हलक। पहिल बेर सीताक माध्यमसँ चीन्हने छल। दोसर बेर विद्यापतिक आँखिये देखलक । परिचय पौलक। मुदा हमरालोकनिक दुर्भाग्य अछि जे बाबाकेँ एहिठामक मुँहपुरुषलोकनि नहि चिन्हलनि। अपना समाजक ठीकेदार नेता, संभ्रान्त लोक, अगुआ कहाबऽ बला सभ दाँततर आंगुर काटऽ लगला जखन सौंसे देशक अखबार, पत्रिका, रेडियो, टी. बी. बाबाक देहावसान पर हुनकर चर्चा केलक। हुनका संग अपन मिथिलाक चर्चा केलक। ओना कहू तऽ इहो कोनो अनर्गल बात नहि थिक। बाबा हिनकालोकनिक लोको नहि छला। इहो सभ

बाबाक लोक नहि छथि। बाबाक लोक तऽ मिथिलाक विपन्न दलित किसान सभ छथि। जे बाबाक दाहसंस्कारमे हजारक हजार संख्यामे लोर भरल आँखिसँ हुनका अन्तिम बिदाइ देलथिन। जिनका लेल बाबा सभ दिन लिखैत रहला। बजैत रहला। जिनका बीच रहब बाबाकेँ सभ दिन पसिन्न छलनि। जिनकर जकाँ रहब, जीवन जीयब बाबाक पहिचान बनि गेल अछि।

बाबा यात्री छला। यात्राक एखनहुँ अन्त नहि भेल अछि। भने शरीरे ओ हमरा लोकनिक बीच नहि छथि। ओ बहुत रास कलम लगा गेल छथि। आइ ने काल्हि ई बीया धरती तरसँ जनमत। लगाओल कलम विशाल वृक्ष बनत। फड़त फुलायत। बाबा पुरैनिक पात पर बैसल सभ के देखैत रहता। बाबा मखान हेता। माछक आँखि सन कोनो बच्चाक आँखिमे तकता। दनूफक फूल सन कोनो बहीनकेँ सिनेह बिलहता। जेठक जरैत दुपहरियामे कोनो हरबाहक कण्ठ शीतल करता। मशीनसँ थाकल कोनो मजदूरक घाम पोछता। कोनो लोकगीत सन श्रमजीवी मनुक्खकेँ ऊर्जासँ भरि देता। दलित प्रताड़ितकेँ एकजुट भऽ संघर्ष लेल ललकारा देता। यात्रीक यात्रा एहिना चलैत रहत।

बाबा हमरालोकनिक लेल 'यात्री' छथि। मुदा सौंसे देशक लेल 'नागार्जुन' सेहो छथि। सौंसे भारत हुनका यात्री-नागार्जुन नामे जनैत अछि। हुनकर नाम किछु रहनु। ओ सभक आत्मीय छथि। एहेन आत्मीय लोक दुनियामे कम्मे होइत अछि। एहन आत्मीयता हुनकामे कतऽसँ अयलनि ? अपन लोक संस्कृतिसँ । मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्त्वपूर्ण अवदान आत्मीयता थिक। ई आत्मीयता हमरालोकनिकेँ बाबासँ सिखबाक चाही। अपन लोक संस्कृतिसँ सिखबाक चाही।

शब्दार्थ

वात्सल्य - बच्चाक प्रति स्नेह

समाङ - अपन लोक

कमैनी - खढ़ पात साफ करब

हेंठ - नीचा उतारब

गछुली - छोट गाछ

अगियाबेताल - साहसपूर्वक कठिन कार्य करयवला

तीमन - दालि। झोरगर तरकारी

चकविदोर - अति आश्चर्य

दनूफ - एकटा उजर फूल जकर उपयोग भरदुतियामे होइत अछि।

कलम - डारि मे डारि जोरि लगाओल गाछ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) अशोकक रचना छनि

(क) बाबाक आत्मीयता (ख) मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा

(ग) पर्यावरण (घ) चन्द्रमुखी

(ii) 'बाबाक आत्मीयता' क रचयिता छथि

(क) रतनेश्वर मिश्र (ख) अशोक

(ग) जयकान्त मिश्र (घ) तारानन्द वियोगी

रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) बाबाकेँ बहुतरास ..... पसिन्न नहि छलनि।

(ii) बाबा ..... बिरीछ बड़ पसिन्न रहनि।

(iiii) पण्डित सभ कतेक तरहक चसमा ..... हुनका देखलनि।

शुद्ध-अशुद्ध वाक्यकेँ चिह्नित करू-

(i) बाबा कहायब हुनका नीक लगनि।

(ii) ओ अपना सामने ककरो किछु नहि बुझैत छला।

(iii) बाबा एकटा खेतिहर छलाह।

(iv) अगहन मास हुनका प्रिय नहि रहनि।

(v) बाबा अपन मिथिलासँ बड़ प्रेम करैत छला।

2. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) बाबाक आत्मीयतासँ की तात्पर्य अछि ?

(ii) बाबाकेँ की सभ पसिन्न छलनि ?

(iii) बाबाकेँ की सभ बात पसिन्न नहि छलनि ?

(iv) सौंसे भारत हुनका कोन नामे जनैत अछि ?

(v) आत्मीयता हुनकामे कतसँ अयलनि ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) पठित पाठक आधार पर 'बाबाक आत्मीयता' क वर्णन करू।

(ii) बाबाक चरित्र चित्रण करू।

(iii) 'बाबाक आत्मीयता' शीर्षक रचनाकेर सारांश लिखू।

(iv) बाबा सभक आत्मीय छथि। कोना ?

(v) 'बाबाक आत्मीयता' शीर्षक रचनाकरे प्रासंगिकता सिद्ध करू।

4. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू:

(i) अपन समान सभकेँ बुझबाक बात अपन संस्कृतिक एहन विशेषता थिक जे विश्वमे कतहु आनठाम नहि अछि। एहने लोक संरक्षक प्रतिष्ठापक आ नीक मनुक्ख होइये। बाबा एहने लोक छलाह।

(ii) मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्त्वपूर्ण अवदान आत्मीयता हमरालोकनिकेँ बाबासँ सिखबाक चाही। अपन लोक संस्कृतिसँ सिखबाक चाही।

गतिविधि-

(i) निम्न लोकोक्तिकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:

फुलि कऽ कुप्पा, गिरगिट सन रंग बदलब, दाँत तर आंगुर काटब।

(ii) बाबाक व्यक्तित्वक चर्चा छात्र आपसमे करथि।

(iii) बाबा मैथिलीमे यात्री आ देश भरिमे नागार्जुन नामसँ प्रख्यात छलाह। - हुनक दुनू नामक सार्थकता छात्र स्पष्ट करथि।

(iv) मिथिलाक संस्कृतिमे लोक संस्कृतिक सभसँ महत्वपूर्ण अवदान आत्मीयता थिक। कोना ?

निर्देश -

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे यात्रीजीक रचनासँ छात्रकेँ परिचित कराबथि।

(ii) नागार्जुन नामसँ ओ कोना देश भरिमे प्रख्यात छथि-शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।

(iii) यात्रीजीक कविताक सस्वर पाठकऽ छात्रकेँ शिक्षक सुनाबथि।

विभारानी

मैथिलीक नवोदित कथाकारमे प्रसिद्ध विभारानीक जन्म 1959 ई. मे भेल। मधुबनी शहरमे स्थायी निवास स्थान छनि मुदा इंडियन ऑयल कॉरपोरिशन, पश्चिमी क्षेत्र, मुंबइमे उपप्रबन्धकक रूपमे कार्यरत छथि। हिनक 'खोह सँ निकसइत' मैथिली कथा-संग्रह मैथिली जगतमे अति चर्चित अछि। हरिमोहन झाक 'कन्यादान' एवं प्रभास कुमार चौधरीक 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी' उपन्यासक हिन्दी अनुवाद हिनका द्वारा कयल गेल अछि। अपन सारस्वत साधनाक प्रसादात् हिनका कथा अवार्ड (मैथिली कथा 'रहथु साक्षी छठ घाटक लेल'), डा0 महेश्वरी सिंह महेश ग्रन्थ सम्मान, तथा घनश्याम दास सराफ । साहित्य सम्मान प्राप्त भेल। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीमे सेहो हिनक अनेकानेक रचना पुस्तकाकार प्रकाशित अछि ताहिमे मिथिलाक लोक कथाएँ प्रसिद्ध अछि।

प्रस्तुत कथा भारतीय जनजीवनक दयनीय दशाक एक गोट मार्मिक चित्र उपस्थित करैत अछि। हमरा लोकनिक समाजमे कतेको गोटे एहन हतभाग अछि जकरा भरि पेट भोजन भाग्यमे नहि लिखल छैक। ओ दिन-राति काज करैत अछि, मुदा अन्नक बिना ओकर बाल-बच्चा भुखल रहैत अछि। भरि छीपा भातक दर्शन ओकर लेल दुर्लभ अछि। कथाक अन्त विषादसँ होइत अछि।

भरि छीपा भात

तहिया हमरा देखिते ओ कोइली जकाँ कुहुकि उठलि। ओकर आँखिक कोटरमे एगो चीज छन्न दऽ समा गैले। रातिरानी सन गंध स' भीजैत ओकर मोन भोरका पुरबासँ सिहकइत देह जकाँ भुलकि गेलै। बोलीमे चिन्नी मिलबइत बाजलि छलि-'कहिया एलौं ?'

गाम-घरमे प्रसिद्ध छैक जे बतहिया लौंगिया मिरचाइ छैक, किन्तु बेर-कुबेर ओ गूड़क भेली भ' जाइ छैक, अनमन वैह फकरा जकाँ -'जेम्हरे देखली खीर, तेम्हरे बैसली फीर'। रामपट्टीबाली कहैत छलै-'दुलहिन, अहाँ एकर बातमे नहि आएब। ई त' अहाँ स' मीठ-मीठ बतिया क' तेहन ने छुरी चलाओत जे अहाँ बुझबो नहि करबइ।'

हरिपुरवाली समर्थन करैत बाजल छलीह हँ सत्ते, अहाँकेँ त' ओ सोझे सोझ हाटमे बेचि क' चलि आओत आ फेर कहबो करत जे हम कहाँ किछु कहलहुँग'।'

कहाँदनि बतहियाक नाम जन्मे स' इएह छलैक। ओना ओ अपन नाम फुलेसरी बतौने छलि। मुदा, लटपटाइत बोली आ अलबटाह चालि ओकर नामकरणक सार्थकता दइत रहैछ।

ओ तोतरा क' अपन टोलक गाथा सुनबैत अछि। तेहेन लोकक, जकर हम नामो नञि जनैत अछि। मुँहो नञि देखने छी। ओकर ई बोली एक त' हमर दिमागेमे नहि घुसय जे घुसय ओ परिचयक अभावमे सूखि जाय। तइयो 'हूँ हूँ' कहने बगैर गुजर नहि छैक। बतहिया तुरतें तगेदा करत -' ओ जे चुल्हिया माय नञि छइ, हे वएह पुबरिया टोलमे जेकर घर छइ। डोमाक घरवाली, सुरताक माय ..... ' आ बेबस हमर गर्दनि स्वीकृति से हिलिए जाइए।

कखनो-कखनो बतहिया एकदम चुप्प भ' जाइत छैक। रहिकावाली बजैत छै जे "बतहिया पर ओकर मतारिक भूत अबै छै आ ओ गुम्मी साधि लेइ छै।"

ओकरा चारिटा धिया-पुता छैक -चारू कारी, नांगट। हाथ गोर लकड़ी आ पेट कुम्हड़ सन। छोटकी छौंड़ीकेँ लऽ अबैत छै आ रोटी माँगि ओकरा थमा दइत छै। छौंड़ीक विरोध कएनो सन्ता जबर्दस्ती ओकरा मुँहमे रोटी ठुसैत छै। पाछासँ 'गदागद मुकियाब' लागै छै।

सासु बजैत छथिन्ह -'रे बतहिया; ए तरहेँ काहे मार' तारीस ओकरा। छोड़ दे, ना खाई

त' । भूख ना होखी ..... का रे, घरे का खइले रहे ?''

'डेढ़ टा मरुआक सोहारी'। छौंड़ी महीन आवाजमे बजैछ आ डगरा सन -मरुआ-रोटीक आकृति आँखि पर नाचि जाइत छैक आ सासु स्तब्ध भ' जाइत छथिन्ह। बतहिया प्रतिवाद करैत छैक-'' त' की भेलै ? गहूँमक रोटी नहि खेलकइग' ने ! मरुआ रोटी त' हल्लुक होअ छै।''

ओकर ओकालती बात पर सासु पिताएल छलीह- "अब बताब', एतनी गो लइका -एतना बड़-बड़ रोटी खा गइली आ ई कह' तारी जे कुछहू खइलेही नइखे। पेटमे जगहिया रही तबे न खाई रे। ''

नरपतिनगरवाली कहने छलह जे ''मौगी बड्ड लोभी छै। कतबो किओ ने खएने रहत, कखनो नञि कहत जे खेने छी। गोटएक दिन ओकर मुँह-पेट सेहो चल' लगैत छै। बुझबे नहि करैत छैक धोंछिया।''

बतहिया हमर हाथ-गोरमे तेल लगबैत अछि। बड़ नीक जकाँ देह जँते छै। मालिश करैत कहैत छैक-''दुलहिन, हमरा एगो रुपया देब ? तेल लाएब .....? हँ, मुदा हमरा एकटकही नहि देब ..... चारिटा चवन्नीए द' देब। नोट त' एकेगो होइ छै। चवन्नी चारिटा भेट जाएत।'' आ आंगुरिक पोर पर चारू चवन्नीसँ अपन बजट बनाब' मे लीन भ' जाइत छल।

बतहियाक गप्पक गाड़ी एहिना आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत कखनो ठमकि जाइछ-' हे यै दुलहिन, अहाँ नमरी देखने छियै ?

कहियो ओकरो आँखिमे सरिसो फुलायल छलैक। हमरास' एक दिन मजाक कयलकै। हमहूँ किछु बजलहुँ त' कहलकैक-'' बुढ़बा बड़ तंग करैए। हे, राति-बेराति आओत आ हाथ पकड़ि क' घीच' लागैयए। मरदाबा बड़ बेशरमा छै। धीया-पुता ओही घरमे सुतल रहै छै। कनियो लाजो-धाखो नहि करत ।''

जतबे सहज ढंग सँ ओ ई सभ गप्प कहि गेल ततबे सहज ढंग सँ ओ एकबेर बाजल छल-' बुढ़बा मरि गेलै। 'धक्कसँ रहि गेलहुँ। ओना ओकरा देह पर कहियो कोनो सुहागक चेन्ह नहि छलै- चीकट गुदड़ी भेल ननगिलाटक नूआ, पाखीक खोता जकाँ केश, कुशियारक गांठ जकाँ हाथ-गोर। ने चूड़ी-लहठी, ने तेल सेनुर । निम्न वर्ग अपन अभावे एकर पूर्ति नहि क' पबैत अछि। उच्च वर्ग अपन शोभामे एकरा आवश्यक नहि बुझय।' बाँचि गेल मध्यम वर्गक स्त्री लोकनि, जे तीनू वर्गक प्रतिनिधित्व करैत महावीरी धाजा जकाँ लाल नूआँ, अढ़ाइ सेरक चूड़ी, लहठी आ सवा सेर सेनूर धारण क' साक्षात वीर-बहू' बनल रहैय।

सासु कहै छलखिन्ह- ''एकर अदमी मरल त' ई तनिको ना रोइल। चार दिनक बाद खेतमे धान काटे जाए लागल। बुझाते ना रहे जे ओकरा संगे कोनो अइसन ओइसन बातो भइल होखे।''

रामपट्टीवाली टुभुकली- ''त' किए कनितै ग'। ओकरा कोनो सुख भेलै, बुढ़बासँ। सभदिन अपने कमाइ पर ओ गुजर करैत आयल ग'। चारि टा मूस बिया लेलकै ग' सए टा ने!''

बतहिया फेर आयल छलि-''दुलहिन, चलू तेल लगा दू।'' ओकरा आँखिमे चारि टा चवन्नि नाचि गैले। माथ पर भरि चुल्लू तेल दइत बाजल छल-''दुलहिन, अहाँ कहियो भरि छीपा भात खेने छी ?''

''ई की ? आदमी छी कि राकस गे ?''

'' ने-ने, हमरा होइयए जे भरि छीपा भात देख' मे कतेक नीक लागैत हेतै ? आ ताहूमे अरबा चाउरक। कतेक सुन्दर महक होइ छै। हमर बुढ़बा चारि-पाँच बेर ओहन भात खइने छल। आधा-आधा छीपा आनबो कएने रहय, मुदा चारिटा टेल्हबा-टेल्हबीमे किछु रह' पबै छैक ..... दुलहिन यै, बड़ नीक लागइ होएतै ने भरि छीपा भात देख - 'सुन' मे !''

रहिकावाली गुम्हरइल हमरा सचेत कएने छली - '' मौगी बड़ घाघ छै। अहाँ ओकरा आउरक फेर मे नै पड़ब। ई त' तेहन ने ओस्ताद अइ जे सात कोसक चक्करि लगा आओत आ तइयो कहत जे पेट पिराइ छल, कतहु नहि गेलियैग'।''

सासु समर्थन कएने छलीह - '' हँ, बताब' न , अबहई अगहन के महिनवाँ मे जत कुत्तो-बिलाई के पेट अफरल रहेला; भरो -भिखार अगड़ैनी कँ साग चबा-चबा के सुतल रहेला, ओहिजा ई लुगाई खेत मे कटनी करे जाला। ततो कबो ना कह सके जे आज भर पेट खइले बानी; केहु तरहे ई बतिया कह ना सके।''

हम कहलियन्हि -'' माँ, किएक नहि एकर जांच कएल जाए। एक छीपा भात ओकरा सोझामे ध' क' देखै छियै।'' आ तें कुशल मनोवैज्ञानिक जकाँ ओकर मन:स्थितिक परीक्षा लेल जुटि गेलहुँ।

अगहन मास। गृहस्थक पुतोहु। सुगंधित अरबा चाउरक भरि छीपा भात। सोझामे बतहिया। हमर उक्ति -'' ले बतहिया, आइ पूरा क' ले मोनक साधं खा ले भरि छीपा भात।''

बतहिया, कँ पहिने त' बुझयलै जे ओ कोनो सपना त' नञि देखैत अछि। फेर तेना ने

घौनाक' क' कान' लागलि जेना ओकर हीत मरि गेल होय। एहि प्रयोगक ई परिणति पर सासु आँखिए सँ हमरा प्रताड़ित कएलीह। रामपट्टीवाली अँचरामे मुँह झाँपी हँस' लगलीह। । रहिकावाली मुँह बिधुआ लेलैन्हि। नरपतिनगरवालीक मुँह पर तेहन भाव आएल जे अनेरे ओ भात बतहिंयाक सोझामे राखि देल गेलै। बानरक हाथमे नारिकेर।

बतहियाक झौहरि शेष भेलै त' ओ हिचुकइत बाजलि - '' एहिठाम हमरा खा' नहि हएत, दुलहिन। हमरा द 'दिय' भात । घरही हम लऽ जाएब।

दोसर दिन फेर चारिटा चवन्नी ओसुलइत बतहिया कहै छलि-'' भरि छीपा भात देखक साध पूर भ' गेल, दुलहिन। भगवान चाहत त' अहींक पुन्न-परतापें भरि छीपा भातो खाइए लेब।

पएर समेटइत चट स' पूछि बैसलिऐ - ''ई की ? त' काल्हि भातक की अचार बना देलही ?''

'' नै, नै ! '' ओ हड़बड़ा गेलि - ''छौड़ा-छौड़ी सभ रह'' 'देलकइग' जे .....

'' तें ने कहने छलियौ जे अहीठाम खा ले। ''

'' कोनाक' खा लितियइग', दुलहिन ! ओ सब उपासे रहि जइतै ने ! ओ सभ भरिपेट खा लेलक, सैह देखि हमरो पेट भरि गेल। मोन तिरपित भ' गेल। ''

शब्दार्थ

छीपा - थारी

भुलकिगेलै - रोमांचित भ' गेलै

अनमन - ओहने । ठीक ओहिना

प्रतिवाद - विरोध

ओस्ताद - गुरु

चीकट - मइल

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू-

(i) भरि छीपा भातक रचयिता छथि -

(क) लिलीरे (ख) उषाकिरण खाँ

(ग) विभारानी (घ) शेफालिका वर्मा

(ii) बतहियाकपति छल-

(क) बुढ़बा (ख) युवक

(ग) किशोर (घ) अधवयसू

2. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) विभारानीक अहाँक पाठ्य-पुस्तकमे कोन कथा संकलित अछि ?

(ii) बतहियाकेँ कैकटा संतान अछि ?

(iii) बतहियाकेँ की देखबाक लालसा छल।

(iv) बतहियाक बात पर कोन महिला हँसय लागलि ?

(v) बतहियाक बोली केहन छल ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भरि छीपा भातक सारांश लिखू।

(ii) कथाक मुख्यपात्र बतहियाक चरित्र - चित्रण करू।

(iii) 'भरि छीपा भात' कथाक उद्देश्य स्पष्ट करू ।

4. निम्नलिखित शब्दक प्रयोग वाक्यमे करू-

अलबटाह, तगेदा, लटपटाइत, चाउर, गुम्हरइत, अफरल।

गतिविधि -

(i) छात्र एक गरीब बस्तीकेँ लोकजीवनक अध्ययन करथि।

(ii) एक मजदूरनी आ दोसर मालकिनीक बीच बार्त्तालाप करैत देखाउ।

(iii) छात्र लोकनिक बीच समाजक गरीबीक कारण पर भाषण प्रतियोगिता कराओल जाय।

निर्देश-

(i) शिक्षक छात्र लोकनिक बीच एक गरीब परिवारक दशाक वर्णन करथि।

(ii) सड़ककातमे ऐंठ पात चटैत बालवृन्दक चित्र छात्र लोकनि बनाबथि।

—

पद्य-खण्ड

विद्यापति

विद्यापति मैथिलीक सभसँ बेसी लोकप्रिय रचनाकार छथि। हिनक जन्म 1350 ई. मे भेल छल। लगभग नब्बे वर्षक आयुमे हिनक मृत्यु भेलनि। ई मधुबनी जिलाक बिस्फी गामक वासी छलाह।

विद्यापति मिथिलाक ओइनवार बंशक विभिन्न राजा सभक समयमे राजदरबारसँ विद्वान रूपमे सम्बद्ध रहलाह। मुदा, हिनक ख्याति अछि राजा शिवसिंहक सखा तथा परामर्शीक रूपमे।

विद्यापति तीन भाषामे रचना कयने छथि - संस्कृत, अवहट्ट, मैथिली। संस्कृतमे हिनक लगभग एक दर्जन पोथी उपलब्ध अछि। एहिमे भूपरिक्रमण, विभागसागर, पुरुषपरीक्षा, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्ति-तरंगिणी, मणिमञ्जरी, लिखनावली आदि प्रसिद्ध कृति अछि।

अवहट्टमे हिनक दूटा पोथी अछि - कीर्त्तिलता तथा कीर्त्तिपताका। मैथिलीमे विद्यापति केवल गीत लिखलनि। मैथिलीकेँ ई देसिल बयना कहने छथि। विद्यापति मिथिलाक देशी भाषामे गीत लिखलनि ई, एकटा क्रान्तिकारी काज छल। कारण, ओहि समयमे साहित्य संस्कृत अथवा प्राकृतमे लिखल जाइत रहय। तखन अवहट्टमे लेखन प्रारम्भ भेल आ तकरा बाद विद्यापति मिथिलाक देशी भाषा, मैथिलीमे गीत लिखलनि।

मैथिलीमे विद्यापति लगभग एक हजार गीत लिखने छथि। हिनक गीत मुख्यत: राधा-कृष्ण आ गौरी -महादेवसँ सम्बद्ध अछि। राधा-कृष्ण विषयक गीत नारी आ पुरुषक प्रेम-भावकेँ दिव्य रूपेँ प्रदर्शित करैत अछि। विद्यापतिक शिव-गीतमे महेशवानी पार्वती आ महादेवक वैवाहिक जीवनक गीतकेँ कहल जाइत अछि, किन्तु नचारी महादेवक प्रति भक्ति -भावसँ प्रेरित अछि। मिथिलामे विद्यापतिक शिव-गीत राधा-कृष्ण विषयक गीत जकाँ, किछु अंशमे ओहिसँ अधिके, लोकप्रिय अछि।

काव्य सन्दर्भ : संकलित शिव-गीत मोहन भारद्वाज द्वारा सम्पादित 'विद्यापतिक शिवगीत' नामक पुस्तकसँ लेल गेल अछि। ई विद्यापतिक महेशवानी थिक । एहिमे पार्वती शिवकेँ सम्बोधित करैत छथि- हम अहाँकेँ बेर-बेर कहैत छी जे मोन लगा कऽ खेती करू। लाज छोड़ि कय अहाँ भीख मँगैत फिरैत छी, एहिसँ अहाँक गुण-गौरव पर प्रभाव पड़ैत अछि। सभ लोक निर्धन कहि कऽ अहाँक उपहास करैत अछि, किओ अहाँकेँ नीक दृष्टिसँ नहि देखैत अछि। यैह कारण अछि जे अहाँक पूजा आक ओ धातूर लऽ होइत अछि विष्णुक पूजा चम्पाक फूलसँ। तेँ हम कहैत छी जे अहाँ खटङ काटि कऽ हर बनाउ, त्रिशुल तोड़ि कऽ फार बनाउ आ बसहा लऽ खेत जोतू। गंगाक पानिसँ पटौनी करू। अहाँक सेवा हम एहने पुरुषक रूपमे करैत रहलहुँ अछि। मुदा अहाँ तँ भिखारि भऽ जीवन-यापन करैत छी। एहि जन्ममे जे भेल से भेल, अगिलो जन्म नीक हो सैह कामना अछि।

शिवगीत

बेरि बेरि अरे सिव
मोजे तोहि बोलगो
किरिसि करिअ मन लाए।
बिनु सरमे रहिअ
भिखिए पए माङिगअ
गुन गउरव दुर जाए।।
निरधन जन बोलि
सबे उपहासए
नहि आदर अनुकम्पा ।
तोहेँ सिव पाओल
आक धुथुर फुल
हरि पाओल फुल चम्पा ।।
खटङ काटि हर
हर बन्धाबिअ
तिसुल तोड़िअ करु फारे।
बसह धुरन्धर
लए हर जोतिअ
पाटिअ सुरसरि धारे ।।
भनइ विद्यापति
सुनह महेश्वर
ई जानि कएल तुअ सेवा।
एतए जे बरु होअ
से बरु होअओ
ओतए सरन मोहि देबा।।

शब्दार्थ

बेरि - बेरि	:	बेर-बेर, बारंबार
मोत्रे	:	हम
बोलओ	:	बजैत छी
तोहि	:	तोरा
किरिसि	:	खेती, कृषि
सरमे	:	लाज कयने
उपहासए	:	निन्दा करय, हँसी करय
अनुकम्पा	:	कृपा
हर	:	शिव, महादेव, महेश्वर
हरि	:	विष्णु
आक	:	अकौन
धुथुर	:	एक फूल, धथूर
खटङ	:	काठक एक अस्त्र जे शिव धारण कयने छथि
तिसुल	:	त्रिशूल
ब्सह	:	बसहा, शिवक बड़द
फारे	:	हरमे पैसाओल धरगर लोहा
सुरसरि	:	गंगा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'शिवगीतक' कें रचयिता छथि-

(क) चन्दा झा (ख) विद्यापति

(ग) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (घ) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

(ii) 'विद्यापतिक' रचना छनि –

(क) शिवगीत (ख) समय साल

(ग) वन्दना (घ) हऽ आब भेल वर्षा

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) बेरि – बेरि अरे ..... ।

(ii) नहि ..... अनुकम्पा ।

(iii) ई ..... कएल तुअ सेवा ।

3. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) निरधन जन बोलि
सबे उपहासए
नहि आदर अनुकम्पा।

(ii) खटङ काटि हर
हर बन्धाबिअ
तिसुल तोड़िअ करु फारे ।
बसह धुरन्धर
लए हर जोतिअ
पाटिअ सुरसरि धारे ।।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) कवि शिवकेँ की करबाक लेल कहैत छथि ?

(ii) शिवक पूजा की लऽ होइत अछि ?

(iii) विष्णुक पूजा कोन फूलसँ होइत अछि ?

(iv) कवि शिवकेँ हर कोना बनयबाक लेल कहैत छथिन ?

(v) शिव खेतक पटौनी कोना करताह ?

Farm

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) एहि गीतमे कवि शिवकेँ खेती करबाक लेल किएक कहैत छथिन ?

(ii) भीख माङबसँ खेती करब किएक नीक अछि ?

(iii) पठित गीत अहाँकेँ की सन्देश दैत अछि ?

(iv) पठित कविताक सारांश लिखू।

गतिविधि-

(i) विद्यापतिक शिवगीतमे महेशवानी
आ नचारी अबैत अछि।
दुनू प्रकारक एक-एक गीत कंठस्थ करू।

(ii) विद्यापतिसँ भिन्न कोनो कविक शिवगीत लिखू।

(iii) निम्नलिखित शब्दक दू-टा पर्यावाची शब्द लिखू :
निरधन, हर, हरि , फूल

(iv) एहि गीतसँ पाँच टा संज्ञा शब्द चुनि कऽ लिखू।

(v) निम्नलिखित शब्दक अर्थ लिखू।
हर, हरि, सुस्सार।

निर्देश-

1. शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे ओ विद्यापतिक आन रचनासँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
2. शिक्षक छात्रसँ शिवगीतक गायन वर्गमे कराबथि।
3. शिवगीतक गायनकेँ छात्र द्वारा विद्यालयक समारोहमे गायन शिक्षक कराबथि।
4. विद्यापतिक भक्ति रचनासँ सेहो शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।

चन्दा झा

चन्दा झाक वास्तविक नाम रहनि चन्द्रनाथ झा, मुदा रचनाकारक रूपमे ई प्रसिद्ध छथि चन्दा झाक नामसँ। ई दरभंगा जिलाक पिण्डारूच गामक वासी रहथि, बादमे मधुबनी जिलाक ठाढ़ी गामक निवासी भऽ गेलाह। ई गाम हिनक सासुर रहनि। हिनक शिक्षा-दीक्षा भेल मातृकमे, सहरसाक बड़गाममे। ओतहि पढ़ि कऽ ई पण्डित बनलाह, विद्वानक रूपमे ख्याति अर्जित कयलनि।

चन्दा झा दीर्घजीवी छलाह। हिनक जन्म 20 जनवरी 1831 आ मृत्यु 14 दिसम्बर 1907 भेलनि। ई जेहने विद्वान रहथि तेहने साधक। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह तथा रमेश्वर सिंहक राजदरबारक मूर्धन्य पण्डित रहथि। ओतहि हिनक विद्वत्ता आ साहित्य-प्रेम विकसित भेल। मैथिली साहित्य संसारमे ई अनुसन्धनकर्त्ता, कवि आ अनुवादक रूपमे विशेष प्रसिद्ध छथि। विद्यापतिक अनेक कृतिक खोज कऽ ओकरा लिपिबद्ध करब, ओकर पाठकेँ सोझरायब हिनक अद्वितीय उपलब्धि अछि। मिथिलाक लोककण्ठमे व्याप्त विद्यापतिक गीतकेँ एकत्र कऽ ओकरा जे मानक रूप देलनि अछि से हिनक कर्मठता एवं विद्वत्ताक अपूर्व दृष्टान्त अछि।

मैथिली साहित्यमे चन्दा झाक सर्वोत्कृष्ट देन अछि, 'मिथिला भाषा रामायण' तथा 'पुरुष-परीक्षाक मैथिली'अनुवाद। मैथिलीमे पहिल महाकाव्य यैह लिखलनि। हिनक रामायणक कतोक पाँती मैथिल मेधाक आ एहि ठामक भाषा-शक्तिक प्रमाण बनि गेल अछि। रामकथाकेँ जाहि सरल आ सहज भाषामे ई रखलनि अछि से हिनका अमर बनबैत अछि। पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद कऽ मैथिलीमे कथा-लेखनक सूत्रपात करबाक श्रेय हिनके छनि।

चन्दा झा मुक्तक-कविताक लेल सेहो प्रसिद्ध छथि। हिनक वैचारिकताक काव्यात्मक रूप मुक्तके रचनामे बेसी मुखर अछि। प्रस्तुत 'समय-साल' कवीश्वर चन्दा झाक मुक्तक कविता अछि।

काव्य सन्दर्भ -पठित कविता मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित, डॉ. विश्वेश्वर मिश्र द्वारा सम्पादित 'चन्द्र रचनावली' नामक संग्रहसँ लेल गेल अछि। एहि कवितामे मिथिलाक बाढ़ि रोकबाक लेल होइत लोकक प्रयास, बाढ़िसँ भेल तबाही आ जनजीवनक त्रासदीक चित्रण अछि। कवि दाही-रौदीक विभीषिकासँ मुक्त सुखमय जीवनक कामना करैत छथि। तखने मिथिला विकास करत, मैथिल अपन बुद्धि बलक छाप छोड़ताह।

समय-साल

भदइ सुखायल धान दहाय।
गरिब किसान कि करत उपाय।।
कोना दिन काटत जिउत कि खाय।
वाल वचा मिलि करै हाय हाय ।।
हृदय जनु फाटत ।
वाँधल छहर ऊच कै आरि ।
राति दिन सभ धयल कोदारि।।
सारि छल उपजल लेल संहारि।
निर्दय कमला कि दहु विचारि।।
हारि हिय वैसल ।
समटु समटु जल कमला माय ।
करु जनु एहन देवि अन्याय।
असह दुख होइछ आस लगाय।
कैलहु खरचा करज कै खाय।।
विकल जन रोइछ ।
वड़ रौदी छल वरिसल पानि।
मघ असरेस कयल नहि हानि।।
चलल छल धन्धा कह कवि चन्द ।
अपन वुतै की होयत काज समय न भेल मन्द।।

8A

शब्दार्थ

भदइ	:	भादवमे उपजयवला अन्न-यथा -मरुआ, गम्भरी
सारि	:	धान, जजाइत
मघ	:	एकटा नक्षत्र, मकर, माघ मास
असरेस	:	श्लेषा नक्षत्र, पूस मास
करज	:	ऋण
छहर	:	तटबन्ध

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) 'समय-साल' कविताक रचयिता छथि।

(क) चन्दा झा (ख) सुकान्त सोम

(ग) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (घ) बुद्धिनाथ मिश्र

(i) चन्दा झाक कविताक शीर्षक अछि

(क) समय-साल (ख) शिवगीत

(ग) वन्दना (घ) हाथ

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) भदइ सुखायल धान .....।

(ii) कोना ..... काटत जिउत कि खाय।

3. शुद्ध/अशुद्ध वाक्यकेँ चिह्नित करू :

(i) राति दिन कोदारि धय छहरक निर्माण कयल गेल।

(ii) बाढ़िमे धान दहाय गेल।

4. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) भदइ सुखायल धान दहाय।
गरिब किसान कि करत उपाय।।

कोना दिन काटत जिउत कि खाय।

वाल वचा मिलि करै हाय हाय ।।

(ii) समटु समटु जल कमला माय।

करु जनु एहन देवि अन्याय।।

असह दुख होइछ आस लगाय।

कैलहु खरचा करज कै खाय।।

5. सही युग्मक मिलान करू :

(i) विद्यापति	(क) एड्सक कालनाग
(ii) चन्दा झा	(ख) जवाहर लाल: जेहन देखलहुँ जहन पेआलहुँ
(iii) चन्द्रभानु सिंह	(ग) समय साल
(iv) जयकान्त मिश्र	(घ) चन्द्रमुखी
(v) लिली रे	(ङ) शिवगीत

6. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) भदैया फसिल कोन मासमे होइत अछि ?

(ii) छहर ककरा कहल जाइत अछि ?

(iii) छहरक निर्माण कोन उद्देश्यक लेल कयल जाइत अछि ?

(iv) बाढ़िमे धान दहा गेलाक बाद किसानक दिन कोना कटैत अछि ?

(v) कमला मायक पूजा कोन उद्देश्य लेल कयल जाइत अछि ?

7. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'समय साल' कविताक भावार्थ लिखू।

(ii) पठित कविताक आधार पर बाढ़िक वर्णन करू।

(iii) भदइ सुखयलाक बाद आ धान दहयलाक बाद गरीब किसानक स्थितिक वर्णन करू।

(iv) चलल धन्धा मन्द भऽ गेल– कवि चन्द्र कोन रूपेँ वर्णन कयलनि अछि ।

गतिविधि-

1. 'बाढ़ि' पर कोनो दोसर कविक कविता लिखू।
2. भदइ फसल ककरा कहल जाइत अछि - छात्र आपसमे चर्चा करथि।
3. मघा आ असरेस नक्षत्रक विषयमे छात्र चर्चा करथि।
4. बाढ़ि अयला पर गरीब किसानक दशाक वर्णन करू।
5. बाढ़िसँ निदानक लेल छहरक निर्माण भेल अछि - पक्ष-विपक्षमे चर्चा करू।

निर्देश-

1. बाढ़िक विभीषिकासँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।
2. कोशी नदीक कुसहा तटबन्ध टुटलासँ धन-जनक हानि भेल, शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।
3. जल देवता कमला मायक आन गीत शिक्षक गाबि कऽ सुनाबथि।
4. छहरक निर्माण किएक कयल जाइत अछि, शिक्षक जनतब कराबथि।

काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

काशीकान्त मिश्रक उपनाम छल - मधुप। एही उपनामसँ ई साहित्य संसारमे प्रसिद्ध छथि। हिनक जन्म भेल छलनि 2 अक्टूबर, 1906 ई. मे। पैतृक छलनि कोइलख, मुदा ई अपन मातृक (कोर्थु, दरभंगा) मे बसि गेल छलाह। संस्कृतक विद्यार्थी रूपमे ई व्याकरण तथा साहित्य विषयमे आचार्य कयलनि, वेदान्तमे शास्त्री। जयानन्द उच्च विद्यालय, बहेड़ा (दरभंगा) मे संस्कृत शिक्षकक पद पर सैंतीस वर्ष रहलाह। हिनक मृत्यु 20 दिसम्बर, 1987 कऽ भेलनि।

मधुपजीक साहित्य-रचनाक एकमात्र विधा छल कविता। ओ गद्य कहियो नहि लिखलनि। व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्री सेहो पद्यमे लिखथि। तेँ हिनका 'कवि चूड़ामणि' क उपाधि भेटल छलनि। सामाजिक दायित्व - बोधसँ प्रेरित भऽ ई काव्य-लेखन शुरू कयलनि। उनैसम शताब्दीक पाँचम दशकमे मैथिली भाषा पर अनेक प्रकारक प्रहार भऽ रहल छल। एहिमे प्रमुख छल मिथिलामे मैथिली-गीतक अपेक्षा हिन्दी सिनेमाक गीतक बढ़ैत प्रभाव। मधुपजी एहि तथ्यकेँ गमलनि। साकांक्ष भेलाह। हिन्दी सिनेमाक तथा अन्य लोक-गीतक भास पर जमि कऽ गीत लिखलनि। अपूर्व रसगुल्ला, टटका जिलेबी, पचमेर, चौंकि चुप्पे, बोलबम आदि एही वैचारिकताक गीत - पोथी अछि।

किन्तु, मधुपजी दोसरो प्रकारक काव्य- रचना कयलनि अछि। झंकार, शतदल, मधुप सप्तशती, द्वादशी, प्रेरणा पुंज आदि कविता संग्रहमे हिनक लोकधर्मी दृष्टिकोणक संग पाण्डित्य सेहो मुखर अछि। 'घसल अठन्नी' हिनक एही कोटिक लोकप्रिय कथा-काव्य अछि। एहि सभक अतिरिक्त हिनक 'राधा-विरह' महाकाव्य अछि जाहि पर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छनि।

काव्य सन्दर्भ - 'भावि भरदुतिया विधान हे ' पहिल बेर चौंकि चुप्पेमे छपल छल जे बादमे प्रसंगवश 'प्रेरणापुञ्ज' मे सेहो संकलित भेल। एहि कवितामे मिथिलाक भरदुतिया पावनिक वर्णन आ ताहि माध्यमसँ भाइ-बहिनक स्नेह-भावक प्रगाढ़ताक उल्लेख अछि। भरदुतियामे भाइक नहि आयब बहिनक लेल कतेक पीड़ादायक होइत अछि, तकर अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल आ मार्मिक ढंगसँ कवि कयलनि अछि।

भावि भरदुतिया विधान हे

नीपि झलकौलेँ घर-अङना दुअरिया
भावि भरदुतिया विधान हे
अरिपन द' पीढ़ी द्यौरि क' रखलिऐ
भैयाकेँ नोतब दय पान हे
यमुना नोतल यम, हम नोती भैया
चाही नहि सोना-चानी, चाही ने रुपैया
या धरि यामुन जल, जीवऽ वर माङि क'
फाँफर फोलब मखान हे
मनक मनहि रहि गेल सब बतिआ
केहन कठोर भेल भैआकेर छतिया
दोष न हुनक, बिनु मायक नैहरबा
भौजिओक हृदय पखान हे
सुनिते साइकिल - घंटी, पाँखि बिनु आँखिया
दौड़य सड़क दिशि, कते बेर सखिया
सुरूज डुबैत भैआकेर ताकि बटिआ
बहि गेल कमला - बलान हे
भटवर तिलकोर कथी ले' तरलिऐ
दही पौड़ि गोटा दूध किए ओरिऔलिऐ
दिऐ उलहन हँसि-हँसि कऽ ननदिआ
भेल मन 'मधुप' मलान हे।

शब्दार्थ

भावि : भावना कऽ, विचारि

भरदुतिया : भाइ-बहिनक पावनि, भ्रातृ द्वितीया

अरिपन : पिठारसँ पीढ़ी/ देवार/ भूमि पर सिनूर दऽ बनाओल चित्र

पीढ़ी : काठक बनायल बैसबाक वस्तु

द्योरि : पिठार/ चूनसँ रङि कऽ

नोतब : नेओत देब, निमन्त्रण देब

फाँफर : फाँड़क धोतीसँ बनाओल धोकरी

मखान : एकटा खाद्य वस्तु जे पानिमे उपजैत अछि।

पखान : पाथर , पाषाण

गोटा दूध : औंटैत- औंटैत खूब गाढ़ भेल दूध

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'भावि भरदुतिया विधान हे' केर रचयिता छथि -

(क) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (ख) चन्द्रभानु सिंह

(ग) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (घ) उदय चन्द्र झा 'बिनोद'

(ii) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' क कविताक शीर्षक अछि

(क) वन्दना (ख) भावि भरदुतिया विधान हे

(ग) एड्सक कालनाग (घ) जय जवान : जय किसान

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) नीपि झलकौलेँ ..... दुअरिया।

(ii) सुनिते साइकिल घंटी पाँखि ..... अँखिआ।

3. शुद्ध / अशुद्ध वाक्यकेँ चिन्हित करू :

(i) भुरदुतियामे अरिपन दऽ पीढ़ी ढौरि कऽ राखल जाइत अछि।

(ii) भरदुतिया पावनिमे घर-अङना नहि नीपल जाइत अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) भरदुतिया पावनिमे किनका नोतल जाइत छनि ?

(ii) नोतबाक की विधान अछि ?

(iii) बहिन भाइ लेल की वर मँगैत छथि ?

(iv) भैयाक स्वागत लेल की-की ओरियान बहिन कयनै छलथिन ?

(v) भैयाक नहि अयला पर उलहन के देलथिन ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'भावि भरदुतिया विधान हे' कविताक भाव स्पष्ट करू।

(ii) पठित कविताक आधार पर भाइ-बहिनक पावनिक वर्णन करू।

(iii) भैयाक नहि अयला पर बहिनक स्थितिक वर्णन करू।

(iv) पठित कवितामे बहिनक नैहरक प्रति भावक वर्णन करू।

(v) भरदुतिया पावनि भाइ-बहिनक स्नेहक पावनि थिक स्पष्ट करू।

गतिविधि-

1. भरदुतिया पावनि पर एकटा संक्षिप्त निबन्ध लिखू।
2. एहि पाठमे मिथिलाक संस्कृति पर चर्चा कयल गेल अछि - एहिपर आपसमे चर्चा करू।
3. नोत लेबाक कालक गीत स्मरण हो तँ गावि कऽ सुनाउ।
4. 'मनक मनहि रहि गेल सब बतिआ
   केहन कठोर भेल भैआकेर छतिया
   दोष न हुनक, बिनु मायक नैहरबा'
   उपर्युक्त पाँतीक संप्रसंग व्याख्या करू -
5. एहि कविताकेँ कंठस्थ करैत सस्वर पाठ करू।

निर्देश -

1. भरदुतियाक अवसर पर गाओल गेल गीतसँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।
2. भरदुतिया पावनि पर गाओल गेल आनोआन पारम्परिक गीतसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
3. शिक्षक छात्रकेँ भरदुतिया पावनिक दिनक विधि विधानसँ परिचित कराबथि।
4. भाइ-बहिनक अटूट स्नेह सम्बन्धक प्रतीक पावनि भरदुतियाक महत्त्वक चर्चा शिक्षक छात्रकेँ कराबथि।

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

यात्रीक मूल नाम छनि वैद्यनाथ मिश्र। मैथिलीमे यात्री आ हिन्दीमे नागार्जुन नामसँ लिखैत छलाह। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1911 इसवीक ज्येष्ठ पूर्णिमा दिन भेलनि। सतासी वर्षक आयु मे 5.11.1998 कऽ दिवंगत भेलाह।

यात्रीक पहिल कविता 1929 ई. मे छपलनि। तकरा बाद ई मृत्युपर्यन्त निरन्तर लिखैत रहलाह। मैथिलीमे हिनक तीनटा उपन्यास प्रकाशित छनि-पारो, नवतुरिया आ बलचनमा। कविता -संग्रह छनि-चित्रा आ पत्रहीन नग्नगाछ। ओना, हिनक सम्पूर्ण मैथिली कविताक संकलन, हिन्दी अनुवाद सहित, सेहो उपलब्ध अछि। 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर हिनका साहित्य अकादेमी, दिल्लीसँ पुरस्कार सेहो भेटल छनि।

प्रगतिवादी रचनाकारक रूपमे यात्री देश-विदेशमे प्रख्यात छथि। लोक-जीवन, लोक-भावना आ लोक-गरिमाक एहन अडिग रचनाकार भेटब कठिन अछि। 'चित्रा' मैथिली -साहित्यमे प्रस्थान बिन्दु अछि। यात्री उपन्यास आ कविताक अतिरिक्तो विधामे लिखने छथि, मुदा सर्वत्र हुनक दृष्टिकोण आ विचारधारा लोकवादी अछि।

काव्य सन्दर्भ -'नागार्जुन-रचनावली' सँ संकलित 'हऽ आब भेल वर्षा' यात्रीक लोकचेतनाक काव्यमय अभिव्यक्ति अछि। वर्षा नहि भऽ रहल छैक। लोक छटपछा रहल अछि। बेचैन अछि। तखने वर्षा होइत अछि। लोकक जानमे जान अबैत छैक। बाध-बोन हरियर होयत। कदम्ब फुलायत। भगत सभ सलहेसक गीतगाय तेँ गहबर ठीक करत । किसान धानरोपनी करत। खेतक आरि पर बैसि कऽ कलौ खायत आ फसिल नीक होयबाक खुशीमे ओकर मन-मयूर नाचऽ लगतैक।

यात्रीक एहि कविताक अन्त किसानक खुशी पर होइत अछि। बल्कि, ई खुशी ओकरे टा नहि अछि, अन्नक आवश्यकता सभकेँ होइत छैक, आ तकर प्राप्तिक प्रसन्नता सभ प्राणीकेँ होइत छैक। तेँ ई कविता वर्षा - ऋतुक लोकवादी आ यथार्थवादी उपयोगिताकेँ उजागर करैत अछि। कविताक शिल्प आ भाषा भावना केँ मूर्त्त करबामे अत्यन्त सहायक अछि।

हऽ आब भेल वर्षा

प्रतीक्षामे बीति गेल कइएक पहर
प्रतीक्षामे चुइल गत्र-गत्र सँ घाम घैलक घैल
प्रतीक्षामे ठमकल रहलै गाछक पात-पात,
सिहकी नहि चललै बसातक
प्रतीक्षामे सूर्य रहि गेल झाँपल ने जानि कतेकाल
मेघक अऽढ़मे
प्रतीक्षामे सुनलक बड्ड गारि अखाड़क ई मास
हऽ, आब भेल वर्षा
हऽ, आब भीजल संसार
हऽ, आब हल्लुक भेल मोन
हऽ, आब उगला सूर्य
हऽ, आब देखबामे आयल चिड़ै चुनमुन
बीज होयत अंकुर नयनाभिराम
प्रतीक्षाक सुफल भेटतैक ओकरा
बाध-बोन होयत हरियर
जुड़ा जयतनि धरतीक मोन-प्राण
ओढ़ि लेत कदम्बक गाछ
पीयर फुदनाबला झालरि
ठीक-ठाक करत भगता सलहेसक गहबर
दूभि के छीलि-छालि साफ कऽ देतनि आइन

भरि जायत पोखरि भऽ जायत उमड़ान
पसरतै ओहिमे ललका कुमुदिनीक पात....
भरि-भरि दिन भीजत लोक
भरि-भरि दिन धान रोपत लोक
आरि पर बैसिकऽ मझनी खायत लोक
आशाक मचकी पर झूलत लोक
कल्पनाक स्वर्गमे बूलत लोक।

शब्दार्थ

पहर	:	कालक एक परिमान, दिन - रातिक आठम भाग अर्थात् तीन घंटा।
सिहकी	:	बसातक /सिहकब
नयनाभिराम	:	देखबामे मनोरम
बाध-बोन	:	गामसँ बाहरक उपजाउ भूखण्ड आ गाछी-बिरछी
उमडाम	:	पूर्ण रूपेण भरल
मझनी	:	दिनक भोजन, मध्याह्न भोजन।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्रीक' रचना छनि-

(क) 'हऽ, आब भेल वर्षा' (ख) समय-साल

(ग) वन्दना (घ) रौदी

(ii) 'हऽ, आब भेल वर्षा' शीर्षक कविताक रचयिता छथि

(क) 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (ख) चन्दा झा

(ग) रवीन्द्र नाथ ठाकुर (घ) सुकान्त सोम

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) प्रतीक्षामे बीति ..... कइएक पहर।

(ii) हऽ, ... भेल वर्षा ।

(iii) जुड़ा जयतनि ..... मोन प्राण।

(iv) भरि-भरि दिन ..... लोक।

(v) कल्पनाक स्वर्गमे ..... लोक।

3. सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) हऽ, आब भेल वर्षा

हऽ, आब भीजल संसार

हऽ, आब हलुक भेल मोन

हऽ, आब उगला सूर्य

(ii) भरि-भरि दिन धान रोपत लोक

आरि पर बैसिकऽ मझनी खायत लोक

आशाक मचकी पर झूलत लोक

कल्पनाक स्वर्गमे बूलत लोक

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) 'हऽ, आब भेल वर्षा' किनकर रचना अछि ?

(ii) वर्षाक प्रतीक्षा लोक कियैक करैत अछि ?

(iii) मेघक अऽढ़मे कथी झाँपल रहि गेल ?

(iv) वर्षा भेला पर बाध-बोन केहन भऽ जाइत अछि ?

(v) वर्षा भेला पर भगता की करताह ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'हऽ, आब भेल वर्षा' शीर्षक कविताक भावार्थ लिखू।

(ii) पठित कविताक सारांश लिखू।

(iii) वर्षाक प्रतीक्षाक वर्णन कवि कोना कयलनि अछि।

(iv) वर्षा भेलाक उपरान्त प्रकृतिक की रूप होयत ?

(v) वर्षाक बाद लोक खुशीमे की सभ करत ?

गतिविधि -

1. निम्नलिखित शब्दक अर्थ शब्दकोशमे ताकिकेँ लिखू ।

   जुड़ा जयतनि, झालरि, गहबर, मचकी, बूलत।

2. वर्षा ऋतु पर आन कविता स्मरण सुनाउ।
3. वर्षा नहि भेला पर कोन तरहक कष्टकक सामना करय पड़ैत छैक - आपसमे छात्र चर्चा करथि।
4. वर्षाक आगमनसँ लोक कोना आनन्दित भऽ जाइत छथि- छात्र अपनामे चर्चा करथि।

निर्देश-

1. शिक्षक छात्रकेँ यात्रीजीक आन कवितासँ परिचित कराबथि।
2. वर्षासँ लोक लाभान्वित होइत अछि, शिक्षक विस्तारसँ छात्रकेँ बुझाबथि।
3. वर्षा ऋतु पर एकटा निबन्ध वर्गमे शिक्षक लिखाबथि।

चन्द्रभानु सिंह

चन्द्रभानु सिंह मैथिलीक नामी कवि छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक नदियामी गाममे भेल छनि। जन्मतिथि छनि । मार्च, 1922 ई०। स्कूलमे अध्यापक छलाह, आब सेवा-निवृत भऽ पूर्णत: साहित्यसेवा करैत छथि। स्वदेश भारती, के ई गीत अलापै छै तथा शकुन्तला (महाकाव्य) हिनक मैथिली काव्य-पुस्तक थिक। हिन्दीमे सेहो हिनक कविता-पोथी प्रकाशित छनि। शकुन्तला महाकाव्य पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छनि।

मैथिलीक लोकप्रिय गीतकार आ कवि चन्द्रभानु सिंह लोकधर्मी रचनाकार छथि। मैथिली गीतक लोकधुन, लोक-रुचि आ लोक - भाव हिनक रचनाक मुख्य विशेषता थिक। मूलत: ई गीतकार छथि, गायक छथि। कवि सम्मेलनक मंचसँ हिनक गीत सुनि श्रोता मुग्ध भऽ जाइत अछि।

काव्य सन्दर्भ - एहिठाम हिनक जे गीत संकलित अछि से अति सामयिक विषय पर केन्द्रित अछि। एड्स अत्यन्त खतरनाक बीमारी अछि। ओहि जानलेवा रोगसँ बचब प्रत्येक युवक-युवतीक लेल जरूरी अछि। तेँ कवि आमलोकक भाषामे आमलोककेँ आजुक कालखण्डक कालनागसँ बचबाक चेतौनी दैत छथि।

एड्सक कालनाग

एड्सक कालनाग उतरल छै सिंधुक कतबय सँ घूसल।
कतऽ सँ ढूकल स्वदेश मे, दिशा-दिशा सँ गरजै छे ।।
आबै छै कम्पायमान भूकम्प आ कि सागरक लहर,
पाराद्वीपक कालरात्रि की करगिल केर विकराल पहर।
ऐटम बमसँ बढ़ि विभीषिका, आइ मनुज -कुल सिरजै छै ।। ।।। कतऽ सँ

एहेन काल घटा मड़राइछ, लोक अचेत पड़ल घर मे,
बूझि ने पड़य मुसीबत केर ढब, संचमच मरचर घर मे,
महादैत्य केर घ्राण साँस आ शोणित मे घुसि कुचैर छै।। 2।। कतऽ सँ

सिफलाहा सब परदेश जा-जा, पाप कमा' घर मे लाबय,
ढाहै वंशक भीत, कुटुम आ अपनहु घर बेबुझ घालय।
छूतक रोग ग्रसय बाघिन सन, अनदेखे दुख सिरजै छै ।। 3 ।। कतऽ सँ

डूबत देश जाहि कुत्सा सँ लाड़ल लोहाकेर लाड़न,
धँसल अलोपे पाप धरा पर अणु बिस्फोटो सँ भीषण।
चेतह बाल-युवा- नवतुर-जन, मोनक मीत चेताबै छै ।। 4।। कतऽ सँ

क्यो की बूझय ककर रक्त मे, विषकेर पुड़िया छै राखल,
महाकाल ककरा सिर उतरत, ककर मृत्यु रग मे झाँपल।
मीतो सँ बचि रहिहऽ मीता मोनक मीता बरजै छै ।। 5 ।। कतऽ सँ

हड़विर्रो मचि रहल देशमे, काल- संकटक आगम सँ,
जकरा मे चरित्रकेर बल छै, सैह निडर भूखल यमसँ,
सहस्राब्द केर शुभारंभ मे, नर-निरघिनकेँ लजबै छै ।। 6।। कतऽ सँ

शब्दार्थ

मनुज	:	मनुक्ख
भीत	:	डरायल
कम्पायमान	:	कम्पित करयबला
विभीषिका	:	भीषण भय
सिफलाहा	:	सिफलिस रोगसँ ग्रसित
मीता	:	मित्र
सहस्त्राब्द	:	हजार वर्ष
निरघिन	:	घृणित
कालनाग	:	समय - साँप, खतरनाक समय
बरजै	:	रोकै, मना करै।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) एड्सक कालनागक कवि छथि-

(क) चन्दा झा (ख) चन्द्रभानु सिंह

(ग) बुद्धिनाथ मिश्र (घ) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

(i) एड्सक कालनागसँ रक्षाक लेल ककर आवश्यकता अछि।

(क) धन (ख) बल

(ग) चरित्र (घ) बुद्धि

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) एहेन काल घटा मड़राइछ, लोक ..... घरमे।

(ii) चेतह बाल-युवा नवतुर-जन ..... चेताबैछै।

3. निम्नलिखितमे सँ शुद्ध / अशुद्धकेँ निर्दिष्ट करू :

(i) सिफलाहा सब कोलकाता जा पाप कमा' घर अनैत अछि।

(ii) एड्स एटम बमसँ विशेष खतरनाक अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) एड्स केहन रोग अछि ?

(ii) एड्सक विभीषिका केहन अछि ?

(iii) एड्सक कारण की अछि ?

(iv) कोन व्यक्ति एहि रोगसँ निडर रहैत अछि ?

(v) एड्सक प्रसारक कारण की अछि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) एड्सक प्रसारक कारणक उल्लेख करू ।

(ii) एड्सक बचावक उपाय बताउ।

गतिविधि-

1. छात्रकेँ अपन आचार-विचार केहन रखबाक चाही तकर आपसमे चर्चा करथि।
2. छात्र लोकनि वर्गमे भाषण प्रतियोगिताक आयोजन करथि।
3 छात्र एड्स निरोध सम्बन्धी नारा तैयार करथि।

4. निम्नलिखित पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) डूबत देश जाहि कुत्सासँ लाड़ल लोहाकेर लाड़न,
धँसल अलोपे पाप धरा पर अणु बिस्फोटो सँ भीषण।

(ii) हड़बिर्रो मचि रहल देशमे, काल- संकटक आगम सँ,
जकरा मे चरित्रकेर बल छै, सैह निडर भूखल यमसँ,
सहस्राब्द केर शुभारंभ मे, नर-निरघिनकेँ लजबै छै।

निर्देश-

1. शिक्षक छात्रलोकनिकेँ एड्सक कारण, लक्षण ओ निदान बताबथि।
2. एड्सक कारणेँ कोनो एक परिवारक सर्वनाश भऽ गेलनि अछि, शिक्षक उल्लेख करथि।
3. छात्रलोकनिकेँ एड्स पर आधारित गीतक चुनाव कऽ वर्गमे शिक्षक सस्वर गबाबथि।
4. एड्स सम्बन्धी नारासँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।

दीनानाथ पाठक 'बन्धु'

दीनानाथ पाठक 'बन्धु' मैथिलीक प्रसिद्ध कवि छथि। बेगूसराय जिलाक टुनही गाममे 1928 ई. मे हिनक जन्म भेलनि। माध्यमिक विद्यालयक शिक्षकक रूपमे ई अपन इलाकामे अत्यन्त लोकप्रिय छलाह। 'चाणक्य' नामक महाकाव्यक रचना सेहो कयलनि। हिनक निधन 1962 मे भेलनि।

काव्य सन्दर्भ -प्रस्तुत काव्य-अंश 'चाणक्य' महाकाव्यक पहिल सर्गसँ लेल गेल अछि। पुस्तकमे कर्मवीर चाणक्यकेँ कहल गेल अछि। एहि शब्दसँ हुनकहि विशेषता झलकैत अछि। मुदा, प्रस्तुत अंशमे कोनो एहन व्यक्ति जे काज करबामे विश्वास रखैत अछि, सक्रिय आ संघर्षशील अछि तकर लक्षण आ महत्वक वर्णन कवि कयलनि अछि। एहि प्रसंग राष्ट्रभक्ति पर सेहो जोर अछि। कविताक विचारे नहि, भाषा-भंगिमा पर्यन्त प्रेरणादायक अछि। ई उद्‌बोधन-काव्यक विलक्षण उदाहरण अछि।

कर्मवीर

कर्मवीर रवि-ज्योति पुञ्जकेँ सहय न विघ्न उलूक
अखिल विश्व पथ दैछ समुज्ज्वल रहने लक्ष्य अचूक
कर्मवीरकेँ निश्चित पथपर विघ्न रहय नहि ठाढ़
ताल ठोकि कय भिड़य जखन पर्वत पर लाबय गाढ़
कर्मवीरसँ कोटि कोटि संकट भयभीत पड़ाय
रहय दु:ख-पर्वत सभ सम्मुख देखितहिँ शीघ्र नशाय
महाविपत्ति न धैर्यधनीकेँ कायरकेँ भय दैछ
शूल फूल सभ आगू आगू हँसइत पथ देखबैछ
घनक चोट सहि लौह धातुसँ होइछ जखन तरूआरि
रहितहुँ छोट अनेक युद्धमे दैछ शत्रु संहारि
अग्नितापसँ स्वर्ण अपन् द्युति द्विगुणित ग्रहण करैछ
कर्मवीर बाधाक आगिसँ तहिना दीप्ति पबैछ
जखन समाज स्वराष्ट्र स्वदेशक होइछ शिथिल सभ अंग
विविध कलुष पातक अनीतिसँ मानवता विकलांग
होइछ प्रखर आह्वान क्रान्ति केर प्रबल प्रेरणा प्राप्त
जनसमाजसँ उद्‌बोधित क्यो उठइछ नेता आप्त
नेता सैह समाजक दुखमय शोषण-पीड़न जाल
उठा लैछ गोबर्द्धन गिरि सभ आङ्गुरपर तत्काल
कालकूट घट पीबि, सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ
मर्त्य-लोकसँ देव-लोक धरि नेता ओ कहबैछ

Fan

विष-ज्वाला-परिपूर्ण नागफन चढ़ि जे नाचि सकैछ
सैह समाजक, धर्मक, राष्ट्रक जन - नेता कहवैछ
टारि घोर संकट स्वराष्ट्र हित कऽ स्वकीय बलिदान
नेता पूर्वप्राप्त गौरव केर बढ़ा दैछ सम्मान

शब्दार्थ

कर्मवीर - काज करबामे बहादुर, काज करबामे विश्वास राखयवला
गाढ़ - रंग, भावनात्कम गंभीर रंग
नशाय - नाश हो
द्युति - चमक
दीप्ति - प्रकाश , चमक
कलुष - पाप

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'कर्मवीर' केर रचयिता छथि।

(क) बुद्धिनाथ मिश्र (ख) उदयचन्द्र झा 'विनोद'
(ग) दीनानाथ पाठक 'बन्धु' (घ) सुकान्त सोम

(ii) 'दीनानाथ पाठक' बन्धुक रचना छनि -

(क) वन्दना (ख) हाथ
(ग) कर्मवीर (घ) रौदी अछि

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू -

(i) कर्मवीर निश्चित .... विघ्न रहय नहि ठाढ़
(ii) घनक चोट सहि .... धातुसँ होइइ जखन तरूआरि
(iii) मर्त्य-लोकसँ देव-लोक धरि .... ओ कहबैछ।

3. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) कर्मवीरक लक्ष्य केहन होइछ ?

(ii) कर्मवीर केहन होइत छथि ?

(iii) पठित कवितामे नेताक की रूप अछि ?

(iv) 'कर्मवीर' किनकर कविता अछि ?

(v) 'कर्मवीर' सँ अहाँ की बुझैत छी ?

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) पठित पाठक भावार्थ लिखू

(ii) पठित पाठक आधार पर कर्मवीरक प्रमुख विशेषता बताउ।

(iii) 'कर्मवीर' क सारांश लिखू।

(iv) पठित पाठमे नेताक लक्षण निरूपित कयल गेल अछि। स्पष्ट करू।

(v) निम्न पाँतीक अर्थ स्पष्ट करू-

घनक चोट सहि लौह धातु सँ होइछ जखन तरूआरि

रहितहु छोट अनेक युद्धमे दैछ शत्रु संहारि

5. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) कर्मवीरसँ कोटि कोटि संकट भयभीत पड़ाय

रहय दु:ख-पर्वत सभ सम्मुख देखतहिँ शीघ्र नशाय

(ii) कालकूट घट पीबि सुधा-रस जगमे बाँटि सकैछ

मर्त्य -लोकसँ देव-लोक धरि नेता ओ कहबैछ

गतिविधि -

1. 'कर्मवीर' पाठ कंठस्थ कऽ सस्वर पढ़ू।
2. निम्न शब्दक पर्यायवाची लिखू

विश्व , पर्वत, स्वर्ण , गिरि

3 शब्दकोशसँ निम्न शब्दक अर्थ ताकू

धैर्यधनीकेँ, घनक, स्वराष्ट्र, कालकूट।

4. सोना जेना आगिमे तपि कऽ चमकैत अछि तहिना कर्मवीर बाधाक आगिसँ आलोकित होइत छथि - फरिछा कऽ लिखू।

निर्देश -

1. कर्मवीरक विशेषता शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।
2. पठित पाठमे नेताक परिभाषा कोन रूपेँ देल गेल अछि फरिछा कऽ शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।
3. 'कर्मवीर' मे कविक कहबाक की उद्देश्य छनि - शिक्षक छात्रकेँ विस्तारसँ बुझाबथि।
4. कोनो कर्मवीरक लघु कथा शिक्षक छात्रकेँ सुनाबथि।